बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'
कवि एवं लेखक
एम॰ए॰; बी॰एड॰; आई॰जी॰डी॰; पीजीडीजेएमसी

206, टाइप-2, आई॰ आई॰ टी॰, कानपुर, भारत
मो॰ 91-9956171230, फो॰ 0512-2598638
E-Mail: kaviutkarsh@gmail.com
Blog: www.kaviutkarsh.blogspot.com

कैद

पिंजरे में कैद, उदास सी एक चिड़िया,
न रोती, न हंसती, न चूँ-चूँ चहकती,
ख़ामोशी की चादर, में तनहा दुबकती,
बहुत फडफडाती, बहुत तडफडाती,
हालातों की जकडन, नहीं तोड़ पाती,
न जाने उसे, कुछ हो सा गया है ,
शायद उसका, कुछ खो सा गया है,
कोई कटाक्ष, शूल सा बिध गया है,
अरमानों का दीपक, बुझ सा गया है,
शायद उसे कैद, होने का गम है,
अक्ष, नीड़-मंजिल से निज, दूर होने पे नम है||

✷ बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'